[श्रीमती सोनिया गांधी]

लिए केवल हमारा प्रत्युत्तर ही नहीं था। गुट-निरपेक्ष हमारे विदेशी मामलों में हमारी संप्रभुता का अभिकथन भी था। यह एक आत्म-विश्वासी, शांतिप्रिय देश की आत्मनिर्भर विदेश नीति थी। विचारों की वह स्वतंत्रता तथा अंतर्राष्ट्रीय मामलों में कार्रवाई की क्षमता आज खतरे में है क्योंकि जहां तक मैं समझती हूं विदेश नीति बहुत कम तैयारी के साथ तथा दीर्घकालिक महत्व की उपेक्षा करके कम उत्साह के साथ तैयार की गई है।

हम सभी जानते हैं कि लाहौर बस यात्रा के निष्कपट कदम के लिए देश को एक ऐसे समय में भारी कीमत चुकानी पड़ी है जब सरकार को यह समझना चाहिए था, और मैं समझती हूं कि सरकार यह जानती थी कि हमारे मेजबान हमारी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहे हैं। अब कांग्रेस तथा अन्य दलों के हम सभी ...र्क रहना चाहिए। हमारे आधारभूत राष्ट्रीय हितों से ... किया जा सकता क्योंकि यह सरकार एक के बाद एक गलत कदम उठा रही है।

लेकिन, महोदय, अपनी बात समाप्त करने से पहले मैं उन राज्यों के लिए, जो आज सूखे के कारण भीषण कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। कुछ शब्द कहना चाहती हूं। मुझे बताया गया है कि हमारे पास खाद्यान्न का इतना भण्डार है, जो विशेषज्ञों के अनुसार हमारे देश की खाद्य सुरक्षा के लिए अपेक्षित मात्रा से लगभग दुगना है। अत: मैं आपके माध्यम से सरकार से अनुरोध करती हूं कि उन सभी प्रभावित इलाकों में काम के बदले अनाज तथा अन्य राहत कार्यक्रमों एवं उपायों की गति में तत्काल तेजी लाई जाए। उड़ीसा के तूफान के दौरान, सरकार ने उड़ीसा के लोगों को अपेक्षित सहायता कभी भी उपलब्ध नहीं कराई। इस संबंध में निश्चित एवं ठोस धारणा यह थी कि वहां विपक्ष की सरकार सत्ता में होने के कारण ऐसा किया गया। अध्यक्ष महोदय, अत: मैं आपके माध्यम से प्रधान मंत्री से अनुरोध करती हूं कि कि वह इस समस्या से निपटने में राजनीति न करें बल्कि उन लोगों की राजनीतिक सम्बद्धता को ध्यान में रखे बिना पीड़ित लोगों की सहायता के लिए न्यायोचित और सदाशयता का परिचय दें।

अध्यक्ष महोदय, हम राष्ट्रपति जी को उनके अभिभाषण के लिए धन्यवाद देते हैं, लेकिन हमें खेद है कि इसमें सरकार की अनेक असफलताओं तथा उसके द्वारा इस प्रिय राष्ट्र को पहुंचाई गई क्षति का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है। धन्यवाद।

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, महामहिम राष्ट्रपति जी ने संसद के संयुक्त अधिवेशन में जो अभिभाषण दिया और जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं, उसके लिए सारा सदन उनका आभारी है तथा उन्हें धन्यवाद देता है। अभी राष्ट्रपति जी फ्रांस की सफल राजकीय यात्रा करके आए हैं, जिससे भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है और फ्रांस के साथ हमारे मैत्री संबंधों में और भी प्रगाढ़ता आई है।

अध्यक्ष महोदय, इस चर्चा में 28-29 माननीय सदस्यों ने भाग लिया। श्रीमती सोनिया गांधी ने अपना मेडन भाषण दिया, इसके लिए मैं उन्हें बधाई देता हूं। ...*(व्यवधान)* राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की हमारी सरकार दो वर्ष से अधिक समय से काम कर रही है। यह ठीक है कि बीच में एक चुनाव हुआ था और 12वीं लोक सभा की जगह हम 13वीं लोक सभा के सदस्य हैं, लेकिन दो साल के कार्यक्रम को उसकी समग्रता में देख कर ही हम ठीक-ठीक मूल्यांकन कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि हम थोड़ा पीछे मुड़ कर देखें। कारगिल पहुंचने के लिए पोखरन तक जाना होगा। पोखरन के समय क्या स्थिति थी, देश की शक्ति भले ही प्रकट हुई हो, लेकिन अंतर्राष्ट्रीय जगत में हमें तीव्र आलोचना का शिकार होना पड़ा था। इतना ही नहीं घर में कुछ आवाजें सुनाई दी थीं, जिसमें कहा गया था कि पोखरन के कारण भारत अलग-थलग पड़ जाएगा। पोखरन से कारगिल रास्ता गया, दोनों मई महीने में हुए-एक 1998 में हुआ और एक 1999 में हुआ, लेकिन दोनों में कितना अंतर है। क्या कोई कह सकता है कि भारत हमारी नीति के कारण अलग-थलग पड़ गया है? क्या कोई कह सकता है कि भारत की दुनिया में साख गिरी है। हम भी आलोचना करते थे और फिर अगर उधर बैठने का मौका मिला तो आपको बताएंगे कि कैसे आलोचना की जाती है। जब अगर आप हमें मौका नहीं देंगे तो हम मजबूर हैं। अध्यक्ष महोदय, अभी भी लाहौर बस यात्रा की आलोचना हो रही है। आप उसे किसी भी नजर से देखें लेकिन लाहौर बस यात्रा के कारण भारत की यह साख जमी कि भारत सचमुच में शांति चाहता है और इसके लिए अतिरिक्त मील तक चलने के लिए भी तैयार है। सारा संसार प्रशंसा कर रहा है और हमारा प्रतिपक्ष! क्यों ऐसा हो रहा है। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव (सम्भल): कारगिल से अमरीका के कहने पर हमने फौजें हटाई हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, दो साल से हमारी यात्रा एक बढ़ते हुए राष्ट्र की यात्रा है। भारत पुराना राष्ट्र है मगर इस समय भारत जवान है, क्योंकि अधिकांश जनसंख्या जवान लोगों की है। आज 60 प्रतिशत लोग 35 वर्ष से कम आयु के हैं और हमें उनकी अपेक्षाएं पूरी करनी हैं। उनके लिए विकास के अवसर जुटाने हैं।

पोखरन के बाद आर्थिक प्रतिबंध लगे थे और हमने उनका सामना किया। अभी भी प्रतिबंध लगे हुए हैं मगर जिस देश ने प्रतिबंध लगाए, उसकी समझ में आ गया कि भारत की यात्रा करना जरूरी है। इसके पीछे भारत की बढ़ती हुई शक्ति है और यह शक्ति कोई दो साल में या दो दिन में पैदा नहीं हुई है, यह मैं स्वीकार करता हूं। इसके निर्माण में जो आज प्रतिपक्ष में बैठे हैं उनका भी योगदान है और हम उनका योगदान स्वीकार करने को तैयार हैं, मगर वे हमारा योगदान स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। हमारा नाम लेने में भी कभी-कभी उन्हें संकोच होता है। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय, मुझे याद दिलाने की जरूरत नहीं है कि जब कारगिल की लड़ाई हुई तो देश में कामचलाऊ सरकार थी, चुनाव आने वाले थे और शायद यही वक्त देखकर हमें हमले का निशाना बनाया गया था। लेकिन हमारी सेना ने बहादुरी दिखाई, सेनापतियों ने ठीक संचालन किया और हमें विजय मिली है वह विजय पूरे देश की विजय थी।

बंगला देश के युद्ध के बाद और स्वतंत्र बंगला देश के निर्माण के बाद मैं प्रतिपक्ष के नेता के नाते सदन में और सदन के बाहर बोला था। आप उन भाषणों को देखिये और कारगिल विजय के बाद आप लोगों ने जिस तरह की भाषा बोली, वह भी आने वाला इतिहास देखेगा। ...*(व्यवधान)*

श्री मणि शंकर अय्यर (मयिलादुतुराई): चीन के हमले के बाद आपने क्या कहा था, उसको भी आप पढ़िये।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, विगत दो वर्षों में राष्ट्र के जीवन में जो परिवर्तन आया है उसका कारण राजनीतिक और सामाजिक स्थिरता है। हम संयुक्त सरकारों के युग में चले गए हैं। न-न करते हमारे प्रतिपक्षी मित्रों को भी ऐसी सरकारों में शामिल होना पड़ रहा है। यह बात अलग है कि वह विधायक दल के सभी सदस्यों के मंत्री बनने पर सरकार में शामिल होते हैं। हमारे यहां 24 दल हैं लेकिन हम उनके साथ ठीक तरह से मिल कर काम कर रहे हैं। इसके लिए सभी दलों को अपने दायित्व को पूरा करना होगा लेकिन केन्द्र में भी जो राजनैतिक स्थिरता कायम हुई है, उससे देश आगे बढ़ा है, देश और आगे बढ़ेगा। कई ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं होती हैं जैसे हाल में कुछ दिनों में उत्तर प्रदेश में ईसाई मत के मानने वाले बन्धुओं को हमले का निशान बनाया गया। सारा सदन उसकी निन्दा करता है। उत्तर प्रदेश की सरकार से कहा गया है। गृह मंत्रालय इस बारे में पूरी जांच-पड़ताल कर रहा है। जो भी अपराधी हैं, वे पकड़े जाएंगे और उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाएगी लेकिन यह दावा करना कि केवल एक पार्टी इस देश में सैकुलरिज्म को बचाएगी, यह देश के साथ न्याय करना नहीं है, देश की संस्कृति के साथ न्याय करना नहीं है। हम भी सैकुलरवाद में विश्वास करते हैं। किंतु हमारा सैकुलरवाद भेदभाव नहीं करता। सब धर्मों के साथ समान व्यवहार और सब का समान आदर किया जाए, यह सैकुलरवाद है, रचनात्मक सैकुलरवाद है। यह हमारे संविधान को एक बुनियाद है। सभी इसके प्रति प्रतिबद्ध हैं। इसे राजनैतिक या दलगत उद्देश्य के लिए प्रयुक्त नहीं करना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, कल तक भारत और पाकिस्तान एक थे। अलग हो गए। पाकिस्तान खुश रहे, पाकिस्तान सफल हो, यह हमारी इच्छा है। उन्हें यह भ्रम अपने मन से निकाल देना चाहिए कि हमने पाकिस्तान के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया है लेकिन हम चाहते हैं कि पाकिस्तान के साथ मित्रता के सम्बन्ध हों, घृणा के सम्बन्ध नहीं। भारत के विरोध पर या हिन्दुओं के विरोध पर पाकिस्तान अगर अपने भविष्य का भवन खड़ा करने का प्रयास करेगा तो उसे विफलता हाथ लगेगी। हमने लोकतंत्र अपनाया। सत्ता परिवर्तन शांतिपूर्ण ढंग से हो रहा है, उसमें कठिनाइयां हैं, वह संक्रमण का काल है। ये कठिनाइयां दूर हो जाएंगी लेकिन हमारे यहां बहुदलीय लोकतंत्र सफलतापूर्वक चल रहा है। पाकिस्तान ने लोकतंत्र का परित्याग कर दिया। जिस दिन दिल्ली में हमारी सरकार सवेरे शपथ ले रही थी, उस दिन अखबारों में खबर छपी कि पाकिस्तान में चुनी हुई सरकार भंग कर दी गई है, प्रधान मंत्री को गिरफ्तार कर लिया गया है और सेना ने सत्ता सम्भाल ली है। ये दो दृश्य हैं जो भारत और पाकिस्तान को अलग करते हैं। पाकिस्तान की समझ में नहीं आ रहा है कि वह अलग-थलग क्यों पड़ता जा रहा है? कॉमनवैल्थ की बैठक में सब देशों ने पाकिस्तान को हटाने के प्रस्ताव का समर्थन किया। यह हमारे लिये आनंद की बात नहीं है लेकिन पाकिस्तान के लिये चिन्ता का विशष जरूर होना चाहिये कि पाकिस्तान क्यों अलग-थलग पड़ रहा है। हम पाकिस्तान के साथ अपने संबंध सुधारना चाहते हैं लेकिन इसके लिये पाकिस्तान को पहल करनी पड़ेगी, उपयुक्त वातावरण बनाना पड़ेगा। अगर आतंकवादी गतिविधियां चलती रहीं, अगर आई.एस.आई. भारत के भिन्न-भिन्न भागो में अपनी सक्रियता बढ़ाता रहा, अगर नियंत्रण रेखा का उल्लंघन चलता रहा, अगर भारत के विरुद्ध घृणा का प्रचार जारी रहा तो ऐसी परिस्थिति पैदा नहीं हो सकती जिसमें सार्थक बातचीत की जा सके। इसलिये हमारी मांग है और मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि पाकिस्तान की जनता के प्रति हमारे मन में सद्भाव और मित्र भाव है। जनता के स्तर पर संबंध सुधारने के प्रयत्न चल रहे हैं लेकिन सत्ताधीशों के मन में क्या है, इसके ऊपर बात निर्भर करेगी कि पाकिस्तान किस तरह से बातचीत करे। हम बातचीत के लिये लाहौर गये थे लेकिन

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

पहुंच गये कारगिल। हम इस तरह की नई यात्रा नहीं करना चाहते। पाकिस्तान को अपना रवैया बदलना पड़ेगा। नियंत्रण रेखा का सम्मान होना चाहिये।

श्री मणि शंकर अय्यर : यह कूटनीति नहीं है, ड्रामेबाजी है।

[अनुवाद]

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय (कलकत्ता, उत्तर-पश्चिम): महोदय, श्री मणि शंकर अय्यर नाटक के खलनायक प्रतीत होते हैं।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : जो फिर से बातचीत के हक में हैं और उस बातचीत को किस परिणाम पर पहुंचाना चाहते हैं, [illegible] होगा कि अब तक जो पड़ोसी के साथ समझौते [illegible] क्या स्थिति है? शिमला समझौता हुआ और उसका उल्लंघन किया गया। लाहौर घोषणा को अमान्य कर दिया गया। अब आगे बातचीत के लिये निमंत्रण दिये जा रहे हैं कि हमारे साथ और समझौते हों और पुराने समझौतों के खंडहर के ऊपर नया करार खड़ा करने का प्रयास किया जाये, यह नहीं होगा। इस संबंध में सारा देश एक मत है। हम मित्रता चाहते हैं लेकिन मित्रता एकतरफा नहीं हो सकती।

अध्यक्ष महोदय, अमरीका के राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन द्वारा गत माह में जो भारत की यात्रा हुई, वह काफी उपयोगी रही। दोनों देशों के बीच संबंधों को गुणात्मक और एक नये आधार पर बढ़ाने में यह यात्रा योगदान देगी। हमें संतोष है कि कश्मीर के सवाल पर अमरीका के रुख में परिवर्तन हुआ है और वह नियंत्रण रेखा का पालन किये जाने के पक्ष में है। राष्ट्रपति श्री बिल क्लिंटन के यहां रहते हुये जम्मू कश्मीर में सिक्ख भाइयों का जो सामूहिक कत्लेआम हुआ, उसने अमरीकी मित्रों के दिमाग में यह बात साफ कर दी कि यह प्रश्न आतंकवाद के द्वारा अपनी बात मनवाने का है, इसमें लोगों की राय लेकर चलने का सवाल ही पैदा नहीं हुआ। जम्मू-कश्मीर भारत का एक अटूट अंग है और अटूट अंग रहेगा। अमरीका का यह कहना कि रक्त के द्वारा सीमा रेखाएं नहीं खींची जा सकती हैं, एक अच्छा वक्तव्य है और हम विश्वास करते हैं कि इसी के आधार पर आगे के कदम उठाये जायेंगे।

आर्थिक क्षेत्र में व्यापार और इन्फॉर्मेशन टैक्नोलोजी के क्षेत्रों में भी भारत के बढ़ते हुए महत्व को अमरीका पहचानने लगा है। प्रेसीडेंट क्लिंटन और मेरे बीच में जो विजन स्टेटमैंट पर दस्तखत हुए, वह हमारे दोनों देशों के संबंधों को बहुआयामी रूप देता है और हमारे संबंध और भी व्यापक बनेंगे, बराबरी के आधार पर हमारी मित्रता चलेगी, यह हम विश्वास करते हैं। अमरीकी राष्ट्रपति के आने से पहले यह भ्रम फैलाया गया था कि भारत पर दबाव डालने के लिए प्रेसीडेंट क्लिंटन आ रहे हैं और भारत पर सी.टी.बी.टी. पर दस्तखत करने के लिए वह दबाव डालेंगे। सी.टी.बी.टी. पर बातचीत हुई, स्पष्ट बातचीत हुई, मित्रता के वातावरण में बातचीत हुई, दबाव का सवाल ही पैदा नहीं होता। हमने अगर दो साल में देश की साख बढ़ाने में सफलता पाई है तो उसका एक बड़ा कारण यह है कि हमने किसी शक्ति के दबाव में आने से इनकार कर दिया है। अमरीका भी हमारी स्थिति को जानता है। सी.टी.बी.टी. के संबंध में हम बातचीत कर रहे हैं, एक आम राय बनायेंगे और उसके बाद कोई फैसला करेंगे, आपकी सलाह से करेंगे, इस बात का मै आश्वासन देना चाहता हूं।

एक प्रश्न जो कांग्रेस पार्टी के मतभेद के कारण खड़ा हो गया है, मैं चाहता हूं कि उसका भी उल्लेख कर दूं, उसका स्पष्टीकरण होना चाहिए। जब कांग्रेस पार्टी का प्रतिनिधिमंडल राष्ट्रपति क्लिंटन से मिला तो क्या बातचीत हुई, क्या मानीमम न्यूक्लियर डिटेरेन्ट की बात हुई थी, स्वतंत्र न्यूक्लियर डिटेरेन्ट। क्योंकि कांग्रेस के एक प्रवक्ता ने कुछ कहा, दूसरे प्रवक्ता ने कुछ कहा। भ्रम हमारे मन में नहीं था, लेकिन अब आशंका पैदा हो गई है। श्रीमती सोनिया गांधी अगर चाहें तो स्थिति स्पष्ट कर सकती हैं। ...*(व्यवधान)* गृह मंत्री जी का कहना है कि छोड़ दीजिए। मैं यह प्रश्न विवाद के लिए खड़ा नहीं कर रहा हूं। अगर कांग्रेस ने यह रवैया अपनाया है तो मैं उसका स्वागत करता हूं, क्योंकि न्यूक्लियर विषय पर पार्टियों में मतभेद नहीं होना चाहिए। जो पुराने प्रधान मंत्री थे वे भी बिना घोषणा किये हुए भारत को न्यूक्लियर सम्पन्न बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। वर्तमान सरकार ने सोचा कि अब मौका आ गया है और हमने उसके लिए कदम उठाया। इस बात पर एक राय होने के लिए हम तो सबका स्वागत करते हैं। हम इन मामलों में राजनीति नहीं बरतते। देश की सुरक्षा सर्वोपरि है, बाकी सब बाद में, और इसे दलगत राजनीति का विषय नहीं बनाया जाना चाहिए।

पिछले दो साल में भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। प्रतिपक्ष की नेता ने जो तस्वीर खींची है वह पूरे चित्र को प्रस्तुत नहीं करती। क्या यह सच नहीं है कि जी.डी.पी. की विकास की जो वार्षिक विकास दर है, वह पहले कम थी और अब ज्यादा हुई है।

अध्यक्ष महोदय, पहले 5.00 प्रतिशत थी, अब 5.9 प्रतिशत है और यह और बढ़ेगी। हमारा अनुमान है 6.5 प्रतिशत तक बढ़ेगी। कुछ दशक पहले तो यह कहा जाता था कि भारत की विकास की दर 2.00 प्रतिशत, 3.00 प्रतिशत है। अब यह विकास

की दर बढ़ रही है। क्या यह सफल अर्थ नीति का परिणाम नहीं है? मुझे विश्वास है कि हम ग्रोथ रेट 7.00 प्रतिशत तक पहुंचाएंगे और 7.5 प्रतिशत या 8.00 प्रतिशत तक यह विकास की दर जाएगी। औद्योगिक उत्पादन 8.00 प्रतिशत से आगे जा चुका है। मार्च, 1998 में उसकी विकास दर 6.6 प्रतिशत थी। विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ा है। पहले 26 बिलियन डालर था अब 35 बिलियन डालर है। ये निर्जीव आंकड़े नहीं हैं। ये आंकड़े बदलती हुई और सुधरती हुई अर्थ-व्यवस्था का प्रतीक हैं।

अध्यक्ष महोदय, हमारा यह दावा नहीं है कि दो साल की हमारी नीतियों का नतीजा है। सचमुच में आर्थिक क्षेत्र में कुछ नीतियां हमें विरासत में मिली हैं। उनमें से कुछ ठीक हैं, कुछ गलत हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी (बोलपुर): आपने गलत को ले लिया है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : गलत को हमने नहीं लिया है। अब हमें यह आश्चर्य है कि हमारे मित्रों ने जो नीतियां शुरू की थीं, अब वे उनसे वापस जा रहे हैं। क्या यह सच नहीं है कि सबसिडी के मामले पर कांग्रेस पार्टी के दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन का कारण क्या है?

श्री माधवराव सिंधिया (गुना): अध्यक्ष महोदय, यदि प्रधान मंत्री जी यील्ड करें और आप अनुमति दें, तो मैं कुछ कहना चाहता हूं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, एक ग्वालियर वाला दूसरे ग्वालियर वाले के साथ ऐसा नहीं कर सकता।

श्री मुलायम सिंह यादव : आप बटुकेश्वर के हैं या ग्वालियर के, पहले यह साफ कीजिए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम तो लखनऊ के हैं।

अध्यक्ष महोदय, सबसिडी के सवाल पर देश को फिर से विचार करना होगा। सब राजनीतिक दलों को मिलकर सोचना होगा। गरीब की सबसिडी बनी रहे, गरीब को जहां सहायता देना आवश्यक है, उसका पूरा प्रबन्ध होना चाहिए। अन्न के लिए, पानी के लिए, आवास के लिए, गरीब के जीवन को सुधारने के लिए, उसके जीवन के स्तर को ऊंचा करने के लिए, आर्थिक क्षेत्र में जो भी कदम आवश्यक हैं, वे उठाए जाएंगे, लेकिन आप फर्टीलाइजर का मामला देखिए। किसान को उसका उतना लाभ नहीं मिलता जितना लाभ कारखाने वाले को मिल रहा है। दुनियां में यूरिया की कीमतें क्या हैं। हम चाहते हैं कि हमारे कारखाने चलें, लेकिन यूरिया के कारखाने बन्द हैं। ...*(व्यवधान)*

हां, हमें मालूम है, आप इन कारखानों को संयुक्त मोर्चा में छोड़कर गए थे। कितनी सबसिडी हो, जब मैं प्रतिपक्ष में था, तो हमारे कम्युनिस्ट मित्र पब्लिक सैक्टर की बात करते थे। ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : अभी भी कर रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हां, अभी भी कर रहे हैं।

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप तो हमारे साथ थे। अब उधर चले गए हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : उस समय भी हम कोटा परमिट राज के खिलाफ थे। ...*(व्यवधान)* आप पब्लिक सैक्टर को कमांडिंग हाईट पर ले जाने की बात करते थे। आज क्या स्थिति हो रही है? मजदूर बेकार हो गये हैं। उन्हें वेतन देना मजबूरी है। ...*(व्यवधान)* जो कारखाने फिर से पुनर्जीवित नहीं हो सकते, उनके लिए क्या करें? आप भी पश्चिम बंगाल में वही कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : आप यूनिट वाइज बातचीत करिये। आपको कितनी दफा बोला है। ...*(व्यवधान)* उनके टाइम में भी बोला है और आपके टाइम में भी बोला है। ...*(व्यवधान)* जो रिवाइव हो सकता है उसको आप रिवाइव कीजिए। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यही तो हम कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : मैं आपको चुनौती दे रहा हूं। प्रधान मंत्री महोदय, आप किसी को नियुक्त कीजिए। हम एक-एक यूनिट को बारी-बारी लेकर बैठें। हम इस पर विचार करें। क्या आप यह स्वीकार करते हैं? ...*(व्यवधान)* हमने कहा है कि यदि कोई यूनिट पुनर्जीवित नहीं की जा सकती है, तो हम इसे स्वीकार करेंगे ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप बंगाल से शुरू करिये। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठिये।

...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम आपसे सहयोग करेंगे। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री बसुदेव आचार्य, कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री बसुदेव आचार्य (बांकुरा): आप पहले रिवाइव करने के लिए कोशिश करिये। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हमने पब्लिक अंडरटेकिंग्स को तीन भागों में बांटा है। एक तो वे हैं जो लाभ में चल रहे हैं। ...*(व्यवधान)* दूसरा, वे हैं जिनको लाभ में चलाने का प्रयास किया जाना चाहिए, सफल हो सकता है। तीसरा, ऐसे हैं जिन्हें बंद करने के अलावा कोई रास्ता नहीं है। उनके भी मजदूरों का भविष्य [illegible] पर विचार करना होगा। इस नीति से किसी को [illegible] सकता। लेकिन आप पश्चिम बंगाल में जो कर [illegible] जगह करने की इजाजत देने के लिए तैयार नहीं हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री बसुदेव आचार्य : बंगाल में कोई कारखाना बंद नहीं कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री सुदीप बंद्योपाध्याय : बंगाल में इंडस्ट्री चलती नहीं है। वह सब बंद कर दिया है। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : ऐसी अंडरटेकिंग्स हैं जिन्हें मदद देकर चलाया जा सकता है तो हम उन पर विचार करने के लिए तैयार हैं। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है? प्रधान मंत्री जवाब दे रहे हैं, यह ठीक तरीका नहीं है।

...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : आपके मंत्री अथवा सरकार यह करें ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इसके लिए मंत्रियों का एक ग्रुप बनाया गया है। जो इस पर विचार करेगा। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री तोपदार, आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं। आप प्रधान मंत्री का विरोध कैसे कर सकते हैं?

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाएं।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं चाहूंगा कि आर्थिक सुधारों पर भी एक राय बननी चाहिए। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री तोपदार, कृपया बैठ जाइए। प्रधान मंत्री जवाब दे रहे हैं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है? आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं। आप प्रक्रिया जानते हैं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बात को न काटें। यह क्या तरीका है?

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : केवल पश्चिम बंगाल का मामला नहीं है। यह एक पार्टी का मामला नहीं है। हमारे कम्युनिस्ट मित्रों को याद होगा कि आई.डी.पी.एल. की फिर से जांच कराकर, उसे फिर से चालू करने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। ...*(व्यवधान)*

श्री रूपचन्द पाल (हुगली): यही तो हमारी मांग थी। ...*(व्यवधान)*

श्री सोमनाथ चटर्जी : अच्छा काम करेंगे तो हम बधाई देंगे। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वही तो नहीं देते हैं। ...*(व्यवधान)* एक बधाई लेने के लिए इतनी तकलीफ करनी पड़ती है। सब मिलकर बैठें और इस संबंध में विचार करें। ...*(व्यवधान)*

कुंवर अखिलेश सिंह (महाराजगंज, उ.प्र.): गोरखपुर का खाद कारखाना बंद पड़ा है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री कुंवर अखिलेश सिंह, आप क्या कर रहे हैं?

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : एक मुद्दा और है, जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूं, वह है संविधान की समीक्षा का। आज श्रीमती सोनिया गांधी जी ने उसको स्पर्श क्यों नहीं किया, मैं नहीं जानता।

अपराह्न 1.00 बजे

शायद उन्होंने सोचा होगा कि सदन के बाहर इतनी बार उन्होंने इस विषय पर बोल दिया है कि अब बोलने की आवश्यकता नहीं है। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि संविधान समीक्षा आयोग के बारे में जो प्रचार हो रहा है।

श्री मुलायम सिंह यादव : सही हो रहा है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : वह प्रतिष्ठा को बढ़ाने वाला नहीं है। वह डा. अम्बेडकर का अपमान तो हो ही नहीं सकता। ...*(व्यवधान)*

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर): समीक्षा आयोग एपाइंट करने का सरकार को कोई अधिकार नहीं है।

...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले, कृपया बैठ जाइए। यह कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले कृपया बैठ जाइए। अन्यथा मैं आपके खिलाफ कार्रवाई करूंगा।

...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : अब तो हद हो गई। कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधानमंत्री उत्तर दे रहे हैं और आप उन्हें धैर्यपूर्वक नहीं सुन रहे हैं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधान मंत्री के भाषण के अलावा कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए।

...*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइये प्लीज।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, संविधान पर चर्चा, जब से संविधान बना है, तब से चल रही है। संविधान में संशोधन भी हुए हैं, गम्भीर संशोधन हुए हैं। इमरजेंसी के दौरान क्या हुआ, किस तरह के कदम उठाये गये, मैं उसमें जाना नहीं चाहता।

श्री मुलायम सिंह यादव : वह भी गलत था, यह भी गलत है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधान मंत्री के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। यह क्या है? श्री अखिलेश सिंह, आप सभा में यह क्या कर रहे हैं?

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

मेजर जनरल (सेवानिवृत्त) भुवन चन्द्र खण्डूड़ी (गढ़वाल): महोदय, हमने सभा में व्यवधान किए बगैर उन्हें सुना है। अब वे सभा में व्यवधान पैदा कर रहे है ...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : लेकिन जब हमने आयोग की बात शुरू की तो यह स्पष्ट कर दिया था कि जो संविधान का बुनियादी ढांचा है और जिसमें सैक्युलरवाद भी है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा। ...*(व्यवधान)* अगर नहीं है तो समीक्षा के बाद रख लिया जायेगा।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आठवले, आप हमेशा ही सभा में व्यवधान पैदा करते हैं। कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

महोदय : पहले आप बैठ जाइये, मि. रामदास आठवले।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, कांग्रेस पार्टी ने 1976 में सरदार स्वर्ण सिंह की अध्यक्षता में एक कमेटी संविधान पर विचार करने के लिए, संशोधनों पर विचार करने के लिए बनाई थी, ए.आई.सी.सी. का प्रस्ताव है। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : वे तो गलत कर ही रहे थे, आप भी करेंगे?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या कहा था?

[अनुवाद]

श्रीमती मार्ग्रेट आल्वा (कनारा): महोदय, वह एक दल की समिति थी, सरकार की नहीं। मैं उस समिति की सदस्य थी ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री माधवराव सिंधिया : अगर आप यील्ड करेंगे तो मैं दो मिनट में कह दूंगा। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आप एक वरिष्ठ सदस्य हैं। प्रधान मंत्री उत्तर दे रहे हैं। अगर आपको कुछ स्पष्टीकरण चाहिए, तो आप उसे प्रधान मंत्री के उत्तर के बाद पूछ सकते हैं। यह सब क्या है? आप यह अभी कैसे कर सकते हैं?

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या पार्टी का प्रस्ताव इसलिए था कि उस पर अमल न किया जाए? आखिर पार्टी ने ऐसा प्रस्ताव क्यों किया?

श्री मुलायम सिंह यादव : गलत किया। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : प्रस्ताव क्या है, आप सुनिए। मैं कोट कर रहा हूं:-

[अनुवाद]

> "अतः कांग्रेस इस बात का आग्रह करती है कि यह पता लगाने के लिए कि क्या वह समय अभी नहीं आया है जब इसमें पर्याप्त संशोधन किए जाएं हमारे संविधान की गहन जांच की जाए ताकि यह एक जीवंत दस्तावेज के रूप में बना रहे, लोगों की मौजूदा जरूरतों और वर्तमान मांगों को प्रभावशाली ढंग से पूरा करता रहे।"

[हिन्दी]

यह आयोग क्या करेगा, क्या इससे अलग इसकी कोई टर्म्स आफ रेफरेंस हैं! यह समीक्षा करेगा। समीक्षा का मतलब है दूसरी नजर डालना ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधान मंत्री के उत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ नहीं सम्मिलित किया जाए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया व्यवधान न डालें।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री के उत्तर के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ नहीं सम्मिलित किया जाए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : यह क्या है? मेरी समझ में यह नहीं आता। कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए।

...*(व्यवधान)**

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

[अनुवाद]

संसदीय कार्य मंत्री तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री (श्री प्रमोद महाजन): महोदय, मैं विपक्ष की नेता से अपील करता हूं। हमने उन्हें शांत रहकर सुना। किसी ने भी उन्हें बाधा नहीं पहुंचाई। अब, लगभग हर बात पर उनके सभी सदस्य बाधा पहुंचा रहे हैं ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह कोई सवाल नहीं है। अध्यक्ष महोदय, आयोग में किस तरह के सदस्य हैं, यह कहने की आवश्यकता नहीं है। उनकी प्रामाणिकता पर, उनकी विश्वसनीयता पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। वे अपनी सिफारिशें देंगे। वे सिफारिशें संसद के सामने प्रस्तुत की जाएंगी। संसद अगर चाहेगी तो किसी सिफारिश को स्वीकार करेगी ...*(व्यवधान)* बाद में संविधान संशोधन के लिए विधेयक संसद में जाएगा, जिसे स्वीकृत होने के लिए दो तिहाई बहुमत की आवश्यकता होगी। आपको इतनी चिंता क्यों हो रही है। इस तरह की चिंता करने का कोई कारण नहीं है ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : बहुत हो गया। श्री रामदास आठवले, बहुत हो गया। कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कुछ माननीय सदस्यों की यह उत्तेजना इस बात की परिचायक नहीं है कि उनका पक्ष प्रबल है और तर्क संगत है। संविधान पर लगातार विचार होता रहा है, संविधान में आगे भी विचार होगा। पहले भी संविधान संशोधन हुए थे, आगे भी होंगे। संविधान कोई जड़ वस्तु नहीं है ...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री प्रकाश यशवंत अम्बेडकर (अकोला): संसद में विचार क्यों नहीं हो रहा है?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आयोग की जब रिपोर्ट आएगी, संसद में विचार होगा। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री प्रकाश अम्बेडकर, कृपया बैठ जाइए। माननीय प्रधान मंत्री के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलत न किया जाए। कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बीच में न बोलें।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, पार्लियामेंट की कमेटी भी बनायी जा सकती थी। ...*(व्यवधान)* लेकिन आयोग बनाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। ...*(व्यवधान)* आप बैठिए। आयोग में जो गणमान्य सदस्य बैठे हैं, आप उनकी प्रामाणिकता पर उंगली उठा रहे हैं। ...*(व्यवधान)* उन पर आपको आपत्ति है। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री प्रकाश अम्बेडकर, कृपया बैठ जाइए। अगर आपकी कोई शंका है, तो आप उसे प्रधान मंत्री से बाद में पूछ सकते हैं, अभी नहीं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : श्री रामदास आठवले, आप हमेशा ही सभा में व्यवधान पैदा करते हैं।

...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : क्या यह प्रधान मंत्री का उत्तर नहीं है? मुझे बताएं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधान मंत्री के भाषण के अतिरिक्त कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

अध्यक्ष महोदय : यह तो हद हो गयी।

...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, संस्कृत में तर्क साथ नहीं देता और जब आप अपनी बात बुद्धि से प्रमाणित नहीं कर सकते, मनवा नहीं सकते तो फिर शेषम् कोपेण पूरचेन। जो कमी है, उसे आप अपने क्रोध से पूरा करते हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर (बलिया, उ.प्र.): अध्यक्ष महोदय, प्रधान मंत्री जी को कोई डिस्टर्ब न करे, यह ठीक है लेकिन प्रधान मंत्री जी इस बारे में आपके साथ कोई तर्क नहीं है, आपने जो काम किया है, वह भूल की है। ...*(व्यवधान)* और जोर से बोलिए। आप शोर करें, इससे मेरा ऊपर असर नहीं पड़ेगा। ...*(व्यवधान)* उन्हें इस प्रकार बोलने दें।

मैं निवेदन करूंगा कि संविधान प्रतिनिधियों के जरिये बना है। अगर उसकी समीक्षा करनी थी तो सरकार के लिए यह उचित मार्ग था कि संसद में आते और कहते कि इस तरह का हम कमीशन बनाने जा रहे हैं। आपका बहुमत था। आप उस काम को आसानी से कर सकते थे लेकिन आपने गलत समय पर संविधान की मर्यादा का, इस संसद की मर्यादा का उल्लंघन किया है, सरकार को इसे स्वीकार करना चाहिए। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मुझे खुशी है कि चन्द्रशेखर जी ने आयोग बनाने का विरोध नहीं किया है, जिस ढंग से आयोग बनाया गया है, उसकी आलोचना की है। प्रक्रिया के संबंध में मतभेद हो सकता है। ...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर : व्यक्तियों के बारे में मेरा मतभेद नहीं है क्योंकि मैं नहीं जानता कि वे व्यक्ति कौन हैं। लेकिन यहां पर भी संविधान जानने वाले आपके ही बहुत से सदस्य हैं। यहां पर नारीमन जैसे आदमी हैं, यहां पर आनन्द जैसे लोग हैं, संसद में बहुत से ऐसे सदस्य हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : रिपोर्ट यहीं आएगी।

श्री चन्द्रशेखर : मेरा यही कहना है कि संविधान के अंदर हस्तक्षेप किसी बाहरी आयोग के जरिये करना संविधान और संसद की मर्यादा के खिलाफ है। अगर आप संविधान के बारे में जानते हैं तो बात करिए। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : पहले भी आयोगों का गठन हुआ है और आगे भी होगा। ...*(व्यवधान)*

श्री चन्द्रशेखर : एक बार हुआ था, जब स्वर्ण सिंह कमेटी बनी थी और उसमें प्रधानमंत्री जी, मैं और आप दोनों एक राय के थे कि वह गलत काम हुआ है। ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए, प्रधान मंत्री जी रिप्लाई दे रहे हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : मैं समाप्त कर रहा हूं। ...*(व्यवधान)*

श्री माधवराव सिंधिया : हमें भी बोलने का मौका दिया जाए। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : क्या माननीय प्रधान मंत्री एक मिनट का समय देंगे? ...*(व्यवधान)* आज वे समय नहीं दे रहे हैं। पता नहीं क्यों। सामान्यत: ...*(व्यवधान)* वे इस मुद्दे पर बहुत आशंकित हैं ...*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, आयोग के सवाल पर अगर मतभेद हैं तो मैं निवेदन करूंगा, ...*(व्यवधान)*

सरदार बूटा सिंह (जालौर): उसे वापस करो। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप अपने मतभेद वापस ले लीजिए, इनमें कोई दम नहीं है, इनके पीछे कोई तर्क नहीं है। वे प्रक्रिया से संबंधित हैं। अब जो उसका मूल है, ...*(व्यवधान)* आपका बहुमत है, राज्य सभा में तो आप पास होने ही नहीं देंगे। ...*(व्यवधान)* मगर देश में चर्चा हो। ...*(व्यवधान)* 50 साल से इलैक्शन हो रहे हैं और सब लोग अनुरोध कर रहे हैं कि इलैक्शन की प्रक्रिया में कुछ संशोधन करने की जरूरत है। ...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

श्री मुलायम सिंह यादव : वह तो इलैक्शन कमीशन कर देगा। ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इलैक्शन कमीशन कर रहा है। वह कर सकता है, हम लोग नहीं कर सकते। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : माननीय प्रधान मंत्री, क्या आप केवल एक मिनट का समय देंगे? ...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : नहीं, वे समय नहीं दे रहे हैं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी शामिल न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : क्या सरकार आयोग बना कर उस पर विचार नहीं कर सकती। ...*(व्यवधान)* क्या संशोधन होना चाहिए, क्या परिवर्तन होना चाहिए, उस पर आयोग विचार करके अपनी रिपोर्ट देगा, वह रिपोर्ट पार्लियामेंट के सामने जाएगी और पार्लियामेंट अगर संशोधन करेगी तो फिर वह संशोधन के रूप में आएगा। लेकिन ऐसा है कि प्रतिपक्ष ने तय कर लिया है कि कोई भी काम सत्ता पक्ष करे, उसका विरोध करना है। इसके अलावा आपके पास कोई मुद्दा नहीं है। मैं चाहता हूं कि आप इस पर पुनर्विचार करें। इस सवाल पर, जिसमें कोई बुनियादी मतभेद नहीं हैं, सदन को, देश को बांटने का कोई लाभ नहीं है। हम आपका सहयोग चाहते हैं और हमें विश्वास है कि आप अपना सहयोग देकर देश में एक सामान्य वातावरण बनाने में हमारी मदद करेंगे। ...*(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या यही सभा की मर्यादा है कि जब सभा का नेता बोल रहा हो, तो उसे बाधा पहुंचाई जाए?

...*(व्यवधान)*

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

अध्यक्ष महोदय : यहां तक कि वरिष्ठ सदस्य भी बाधा पहुंचा रहे हैं।

...*(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : माननीय प्रधान मंत्री के भाषण के अलावा कार्यवाही-वृत्तांत में कुछ भी सम्मिलित न किया जाए।

...*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस देश के भविष्य को बनाने के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर एक आम राय की जरूरत है, लेकिन मैं देख रहा हूं कि प्रारम्भ के कुछ दिनों को छोड़ कर, जो सबसे बड़ा विरोधी दल है वह अपनी लोकप्रियता को खोया हुआ देख कर हर बात का विरोध करने का प्रयास कर रहा है। उसका रवैया नकारात्मक है। ...*(व्यवधान)* अभी कई प्रदेशों में सूखा है। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : आपने धन्यवाद दिया था कि कांग्रेस के लोग सहयोग कर रहे हैं। ...*(व्यवधान)* अब आप कह रहे हैं कि ये विरोध करते हैं। क्या विरोध करते हैं? ...*(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप आपस में तय कर लीजिए। ...*(व्यवधान)*

श्री मुलायम सिंह यादव : सोनिया गांधी जी का आभार व्यक्त करते हैं और कहते हैं कि ये विरोध करते हैं। ...*(व्यवधान)*

श्री राजेश पायलट (दौसा): अध्यक्ष महोदय, हमने हमेशा इसका विरोध किया है और करते रहेंगे।

श्री मुलायम सिंह यादव: अध्यक्ष महोदय, इनकी आपस में मिली-भगत है। पूरा देश जानता है कि समाजवादी पार्टी बीजेपी से लड़ रही है और कांग्रेस पार्टी समाजवादी पार्टी से लड़ रही है।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, देश के कई भाग सूखे से पीड़ित हैं, परिस्थिति गंभीर है और सदन में इस पर चर्चा हो चुकी है। सभी माननीय सदस्य चिंता में शामिल हैं। राजस्थान, गुजरात, आंध्र और मध्य प्रदेश में भी ...*(व्यवधान)* इसलिए मैंने सब प्रदेशों के नाम नहीं गिनाए थे। किसी प्रदेश को छोड़ने का हमारा इरादा नहीं है। सबको सहायता देना हमारा लक्ष्य है। यह ऐसा मामला है जिसमें राजनीति नहीं आनी चाहिए लेकिन

*कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया गया।

उड़ीसा के मामले में दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हुआ, राजनीति लाई गयी और यह कहा गया कि इसको सबसे बड़ी आपदा घोषित क्यों नहीं करते। ऐसा करना कोई आवश्यक नहीं था और हमने पूरी सहायता की।

श्री माधवराव सिंधिया : आप इस पर खुद एक विस्तृत चर्चा लाने जा रहे हैं। आपका इरादा क्या है, समझ में नहीं आता।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : आप समझना चाहते हैं? अध्यक्ष महोदय, हमारी तरफ से पूरी सहायता देने की कोशिश हो रही है। सब दल मिलकर इसमें काम करें, आज इस बात की आवश्यकता है। जानवरों के लिए चारे का प्रबंध किया जा रहा है, रेलगाड़ियां चलाई जा रही हैं। पीने के पानी का प्रबंध आवश्यक [illegible] लिए कदम उठाये जा रहे हैं। आपस में मतभेद [illegible] कुछ ऐसे मुद्दे हैं जिन पर हम मिलकर काम कर सकते हैं। मैं सारे सदन का सहयोग निमंत्रित करता हूं और इसके लिए आज एक सर्वदलीय बैठक की भी योजना बनाई गयी है। उसमें आप भाग लें, सुझाव दें। प्रदेश सरकारों का रंग क्या है, उसके आधार पर केन्द्र मदद करेगा या नहीं करेगा, यह सवाल पैदा नहीं होता। हम सबकी मदद करेंगे। सब भारत के वासी हैं, सब देशवासी हैं और जो भी मुसीबत में हैं उनके लिए सहायता देना हमारा कर्तव्य है और हम सहायता देंगे। इसमें आपका योगदान जरूरी है।

अध्यक्ष महोदय, मैंने बहुत ज्यादा समय ले लिया। मेरा इरादा तो बहुत छोटा भाषण करने का था, लेकिन इनके कारण भाषण लम्बा होता गया, लम्बा होता गया। मैं सदन का आभारी हूं। *...(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, अब मैं अपना भाषण समाप्त कर रहा हूं। धन्यवाद।

...(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : **सदस्यों द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव पर कई संशोधनों का प्रस्ताव किया गया है। क्या मैं सभी संशोधनों को एक साथ सभा में मतदान के लिए रखूं या कोई सदस्य किसी विशेष संशोधन को अलग से मतदान के लिए रखवाना चाहता है?**

...(व्यवधान)

श्री बसुदेव आचार्य : महोदय, मैं अपने संशोधन को मतदान के लिए अलग से रखवाना चाहता हूं *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : **श्री बसुदेव आचार्य, आपके संशोधन की संख्या क्या है?**

श्री बसुदेव आचार्य : महोदय, सशोधन संख्या 276 है। यह आवश्यक वस्तुओं की मूल्यवृद्धि के संबंध में है जिससे हमारे देश की जनता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। *...(व्यवधान)* महोदय, उन्होंने आवश्यक वस्तुओं की मूल्यवृद्धि के बारे में कुछ नहीं कहा है। *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : धन्यवाद प्रस्ताव पर कई माननीय सदस्यों ने प्रश्न पूछे थे और माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने उनका उत्तर भी दे दिया था।

...(व्यवधान)

श्री सोमनाथ चटर्जी : प्रधानमंत्री ने आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में हो रही [illegible] के बारे में कुछ नहीं कहा है।

...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया मेरे साथ सहयोग करें। श्री माधवराव सिंधिया, माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने कितनी बार जवाब दिया है? कितनी बार उन्होंने हस्तक्षेप किया है? कृपया इसे समझें। यह क्या है?

...(व्यवधान)

श्री माधवराव सिंधिया : महोदय, यह हमेशा होगा। प्रत्येक अध्यक्ष ने अवसर प्रदान किया है। हमें स्पष्टीकरण मांगने का अधिकार है। *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : **यह बड़ा खेदजनक है।**

...(व्यवधान)

श्री माधवराव सिंधिया : **महोदय, यह सही तरीका नहीं है।** *...(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : **क्या आप मुझे बताएंगे कि माननीय प्रधानमंत्री महोदय ने कितनी बार हस्तक्षेप किया है और कई माननीय सदस्यों को उत्तर दिया है? यह क्या है?**

...(व्यवधान)

श्री माधवराव सिंधिया : **महोदय, आप प्रधान मंत्री महोदय का बचाव कर रहे हैं। मैं केवल एक स्पष्टीकरण चाहता हूं।** *...(व्यवधान)*